

# एकादशी

17050  
19-8-15



राजावादे का  
विद्वान् संस्कृत संशोधन मंडल

संस्कृत

श्री अमरनाथ का

पा० सुभाष, पो० विप्लवी,

बिला० सदस्य

# एकादशी

लेखक

राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च कौन्सिल, पटना



प्रकाशक

श्री अमरनाथ झा

प्रा. गुरुवार, पो. निर्मली,

जिला. सदरसा



# एकादशी



पटिल श्री लक्ष्मीकांत सा।  
उप-अध्यक्ष  
विद्युत विभाग कोसावडी, पटना

## उपहार

समृति, संविधान औ दंडनीतिक कठोर तथ्यक विश्लेषण  
मे कलान्त मोन के शीतल बनेवाय कया-  
मकलक महान् वैसी वंडित श्री सहमी  
कान्त भाजीक कर कयन मे  
सादर भेट ।

—राजेवर भा

## प्राक्कथन

संस्कृत साहित्य में अलंकारी लोकनि गणकाव्यक बुद्ध भेद—कथा एवं आख्यायिका रूप में मानलैन्ह भलि । अमरकोषक 'आख्यायिकोपलब्धार्थ', एवं 'अलंकारकलाशोक' वाक्यक अनुसार अकर कथाजस्तु सत्य होइत ओ आख्यायिका तथ्य अकर कथावानु कल्पित होइत ओ कथा भिक । अग्निपुराणक अनुसार आख्यायिका लोकनि कहल जावत जाहि में कथाहरण, संघास, विधर्मक इत्यादि विपत्तिक वर्णन पूर्वक दीसल जाइत, तथा अकर एवं अवरुध नामक लोक वाजोल पाइत और कथा ओ भिक जाहि में अधिक बर्णक कारण से संश्लेष वर्णन एवं सुलभायक अलंकारनाक हेतु समुच्च रूप में अथ कथाक योजना होइत तथा परिच्छेदक विभाजन रहि मय समाप्तान सम्मक रहैत ।

अरुत कथाक सुवर्णत भारतवर्ष में प्रायः संस्कृति ओ सम्यक्ताक संघर्ष भेल । पुराणिक कतिपय कथा रामायण, महाभारत एवं पुराण एतत् वाजोल पाइत । आत्म अवन निकल में अगन्त प्रारम्भ में वैदिक कथाक स्तिरक स्वीकार किमिहार पीरामिकक एक गोट सम्प्रदायक चर्चा कएलैन्ह भलि । कथाक विन्यास में संहिता, चातुष्य एवं उपनिषदक अतिरिक्त शोनकीय बृहद् वजा तथा नैतिमंजरीक आग्रस भेल गेल । बाभूतः बृहद् वजाहि वैदिक कथा के स्पष्ट करैत भलि ।

प्राचीनकालक कथा-साहित्य में जातक-कथा के सभ से प्राचीन तथा जनपेक्षा वैध मानल जाइत । जातक शब्दक अर्थ होइत जन्म सम्बन्धी । एहि कथा में जगदान बुद्धक पूर्व जन्म से सम्बन्धित बाँध छैत ईतिमिन् अन्तक तस्तेस वाजोल जाइत ।

जातक-कथाक रचयिता, संग्रहकर्ता वा अनुवादकक भाग में चित्तर एकमत नहि छैत । गद्यवंश एवं जातकदुकथाक अनुसार बुद्धजीव वा बुद्धमिन् एहि कथाके संग्रह कएलैन्ह ।

जातक-कथाक अन्तिम संग्रह वा सम्पादन अने किछी कएने होगू मुदा एहि में कतिपय एहनी कथा भलि में जगवान बुद्ध से पूर्वक गानल जाइत । जातक कथाक सम्बन्ध अत एधारण से एवं बृहद् विज्ञप्ति केसा श्रुता एहि में बौद्ध एवं ज्योद्ध दुहुक कथाक साम्यता गार्भीत जाइत में एके प्राचीन परम्पराक भूषि भिक । अतएव एके कथा बौद्धक रूप में रहि बौद्ध तथा ज्योद्धक रूप में रहि ज्योद्ध रूप धारण कएलक ।

नही धरि जामि बाहु मयक सम्बन्ध भलि एहि कथा से किछु निषिदक में स्वतंत्र रूप में जाइत भलि । गद्यवंशक अनुसार ईसवी सभक प्रथम शताब्दी मध्य निषिदकक रचना भेल । किन्तु एहि में बहुत पूर्वहि जातकक कतिपय कथा जगना नामक संग भरहुतक स्तूप पर अंकित कएल गेल अनार निर्माण ईसवी सन् द्वितीय शताब्दी पूर्व

मे देल । कलः ई निबिबाव अछि मे बातक-कथा ईसा पूर्बे रचिय गलाओक पूर्बे ई  
सए ईसाक हिन्दी गलाओक सम्बन्ध कहि संलग्न कएल गेल ।

बातक-कथाक ऐतिहासिक मूल्य सभे कम हो मुदा मानव जीवन ई सम्बन्धित  
लागः शरीरक विवर्धन निकटतम एहि मे पाओल जाइत । बातक-कथा मे उठव-बीसव,  
साएन-बीसव, ओइव-पड़िब दायरि सामान्य विषय ई सए विश्वकथा, व्यापार,  
वर्धनोक्ति, राजनोक्ति, एवं समान संवत्सरक विस्तृत ऐतिहास्य पाओल जाइत । कलः  
एहि कथा ई कामची सए परवर्ती कथा-साहित्यक रचना मेल ।

ईसाक अठव-द्वितीय शताब्दीक सम्बन्ध कथा-साहित्य एक मज मोर सएलक ।  
ओ बाब-सन्तबाहुनक पुन सन । ओहि मुकक व्यापारीक देशान्तर भ्रमणक अनुभवक  
साधारण तालकाभीन बुद्धिपर भारतक कथ, सीसीसिक स्थितिक लोभ धिक्-भिन्न वैसाक  
भीतिक रीति-रिवाज अदिक लभाविय गुणरूप मानक एक पवित्र अथवा "बृहत्कथा"  
मानक रूप मे कएलन्ह ।

पुनारुपक "बृहत्कथा" ई एहि समय दुष्प्रभाव अछि मुदा मानक रूपेनरित,  
देशीक काव्यांश, संकेतक बृहत्कथामकरी तथा सोपनेनक कथापरिभाषा मे  
एहि संभव पद्यो आएल अछि ।

पुनारुपक "बृहत्कथा" कथासि सभक गवि ल्याल कुल महाभारत सद्यस एहि  
देशक काव्य एवं कथा साहित्य मे देल । सोपनेक ई कल कथा परिभाषाक रचना  
"बृहत्कथा" ई कामची सए कएलन्ह अछि मे कतिपय बातक-कथा निरामान अछि ।

अगिष्ट सम्बन्धक अधिवास कथाक साधारण बातकहि मे पाओल जाइत तथा  
एहि ई महाभारत सए हिन्दोदेशक रचना कएल गेल । ईन बाहुमय मे सेहो कथाक  
सम्बन्ध अछि मे कोनो मे कोनो कने बातक-कथा ई सम्बन्ध अछि । कथा साहित्य मे  
"वीरगाथ सम्बन्धित", "सिंहान्त हाथिका", "पुनःसन्तति" सादि संक प्रमुख  
अछि ।

कथाक उद्देश्य बहुत मनोरञ्जक अछि सए मानवजीवनक वस्तु लक्षक ज्ञानि  
सीही होइत । कथा-साहित्य समुच्चय सभ ई अदिक समस्त काव्यमानना एवं विस्तृत  
मानवक जीवन तादात्म्य के बीच करार ओइन दर्शन मे मानक करीब । एहि  
काव्यलक्षक लौकिक एवं जलौकिक दुइ बीह भेद अछि । लौकिक मानवक सामान्य  
वासना तथा जलौकिक दुइ भेद होइत । मानव अविष्य एवं कलमक कारण तथा  
दुइ बीच भिन्न एवं अतिदायक भिन्न । तपस्याक माध्यम ई वास्तविक लौकिक  
जीवन के चरित्रक ई अथवा उदात्त विस्तृत जलौकिक जीवन पवित्र भूमि तक मानवक  
वासना के पहुँचाए एहि कथा-साहित्यक उद्देश्य होइत ।

विशाल उद्देश्य ई कथा साहित्यक कम महत्त्व अछि पाओल जाइत । "क  
वर्धनार्थ वसतीति कारणात्" काव्य एहि मानवता के स्वीकार करैत तथा मानव-  
संस्कार के संस्कार तथा बुद्धि परिपाकक हेतु सास्त्राध्ययक अतिरिक्त नुसबदेश,  
सामान्य संगति एवं विमलजनक अनुकरणहु आवश्यक होइत । सगएक समुच्चय  
कर्तव्यक निर्देशक हेतु मानव जीवनक दुइ वक्त लौकिक एवं जलौकिक मानक  
समुचित उपयोगक विमर्शक कथा-साहित्य मे पाओल जाइत । कथा-साहित्य सम्बन्ध





## विषय-सूची

	पृष्ठ
१. आन्तरिक जल	१
२. सत-सत-सत	६
३. आन्तरिक जल	११
४. निष्कृति जल	१३
५. विभिन्न जल	१४
६. जल	२१
७. संगणित जल	२३
८. दिशा-जल	२५
९. विज्ञान-जल	२७
१०. सत-सत	२८
११. जीव-जल	३३

## भाग्यक फल

मालव देश में यज्ञसेन नामक एक ब्राह्मण होता है। हुनका कालनेमि तथा निगतमन नामक दुई गोटे पुत्र जलपिन्ध ।

यज्ञसेनक मृत्यु अकस्मय में होलैन्ह तथा विवाह मृत्युक उपरान्त ओइ दुई बाला पिता शक्तिरक्षेणु पाटक्षिपुत्र आए देवशर्मा से विद्या ग्रहण कलैन्ह । विद्या-प्राप्तिक पर्याप्त देवशर्मा ओइ दुई बालाक स्वार कवन दुई कन्याक संग कए देलपिन्ह ।

विवाहक उपरान्त कालनेमि केँ भनक सहा होलैन्ह तथा ओइ अपन पत्नीस केँ अधिक सम्पन्न देखि ईर्ष्याभरित होए लगलाह । कतएव भनक अभिलाषार्थ ओइ लक्ष्मीक आराधना कए विधिवत होयक द्वारा लक्ष्मी केँ प्रसन्न कएलैन्ह । लक्ष्मी हुनक अर्चना से प्रसन्न भए स्वयं हुनक गंगत शरट भेलीह तथा कालनेमि केँ परदान दए कहलपिन्ह "सही वशीम देवशर्माजी एवं दुखी पति पुत्र केँ तें प्राप्त करन मुदा सही द्वारा अग्नि में देल रहन दुखी से दूखित भेला सन्धि फलुगिरा छल । अतः अशोक मृत्यु हुनक नहि होयत ।"

कालनेमि कालनेमि आपन लक्ष्मीक मए गेलाह तथा हुनका एक गोटे पुत्र होइ अन्य होलपिन्ह अधिक नाम ओइ अदत्त राखलपिन्ह ।

समय पानि अदत्त सहा लगलाह तथा ब्राह्मण होएतह ओइ अन्न-शर्कर एवं मद्य सुख में प्रवीणता नाम कएलैन्ह ।

कालनेमिक रुग्णता आला विगलभयक पत्नीक सान काटला से मृत्यु भए गेलैन्ह । अतः ओइ अपन पत्नीक सद्गतिक निमित्त तीर्थ यात्राक हेतु अन्यत्र चल गेलाह ।

अदत्तक पराक्रम एवं धीरता आदि गुण केँ देखि राजा बलमशक्ति हुनका अपन पुत्र विक्रमशक्तिक मित्र बनाओल । तदन्तर अवन्ति देशक पाटुशाली तथा परमबुद्धि नामक दुई गोटे बुद्धिधर धीर अदत्तक मित्र बनि गेलाह । एहि तरहें महाबल, व्यासभट्ट एवं निष्ठुरक आदि अनेक पराक्रमी व्यक्ति अदत्तक मित्र भए गेलाह ।

एक समय राजपुत्रक संग अदत्त तथा हुनक अन्य मित्र लोकनि गंगाक तट पर विहारक हेतु गेलाह । ओतए विनीत में राजकुमार विक्रमशक्तिक संग अदत्त एवं









कण्टो-4 तथा सीडन एक वाणिज्य के राजकुमारिक निवास स्थान पर खुलाफ हेतु चरीतगिन्द । यह ही के मरन वायु रणि माणिकः दण्ड जरेवाक कर्मिवागि  
आदि भान से कागि लमाष्ट रेल तथा सुन्दर्य से राजकुमारिक के मण्ड बाहर  
अधर्जिद ।

कदम्ब धन्विना कर्त्तुं श्रीदत्त कदम्ब मुहू मिश्रक लग रं द्रुम वि रुं भाग्यविदा क  
 शीत लग रं भाग्यविदा क क लग रं द्रुम वि रुं भाग्यविदा क

राजकुमारिक १२ रन में प्यारि नमस्त्रा में कंटल हाथ फट आता था। बागबिड़ी करि गेल। इ नमो गानक सुनलाने ओ सारि नमो गानक मने २ राजकुमारि मही भति गेल ह ।

राजकुमारिक दत्ताक उपरान्त अंतिम मद्र मुर्खीय स्वर्णम लक्ष्मी के प्रणय कहलाए । अंतर्गत प्रीति के अभावसे ही दत्तक लक्ष्मीवात भावनिष्ठा के साथ अपने पिता के साथ प्रेम के बंधन में बंधा रहता है । लक्ष्मी के दत्त के प्रति प्रेम के कारण ही वह अपने पिता के साथ बंधन में बंधा रहता है । अंतर्गत प्रीति के अभावसे ही दत्तक लक्ष्मीवात भावनिष्ठा के प्रणय कहलाए । अंतर्गत प्रीति के अभावसे ही दत्तक लक्ष्मीवात भावनिष्ठा के प्रणय कहलाए ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]







किन्तु कालक उपान्त भंडलक विलो भंडन के एकान्त में बसाए कइअबिन्दु  
 "हे पुत्र, राजा सुरमन के एक कन्या छकिन्तु मे लगनगुदरि छथि । राजा एहि  
 कन्या के लए सोकरा करव दानव निमिन करानि देल जेव क अ देल देले-इ काँइ ।  
 इस भाग में एहि कन्या क हँस कहँ के दवाइ य देल छी । कत कहँ अपनि  
 देल के प्रस्थान कर ।"

एहि तरहँ निरुनय कर विवाहय एव अरन राजाक एता एव दवाइक  
 लागीक तय कोहि कन्या के लए कलनक दू धामन दएनाई ।

किन्तु कालक उपान्त कलन के ल करन विवाह कनक तयल सय धनि  
 लकाइ कि बाइक एव वैव दल हुनका ल दनि के भाग लकि सयन सन के कोहि  
 भंडन मधी एव राजकुमारि के कनि सयन कनक लय छयन दगर दे लए बाइक  
 सयन मुगका कोठनि के पदिकक एक पदम धनि म पदमकन सयन पदम  
 सयन धनि म हुनका संगलिक मयक कइअन पुनई म करि लय ।

भंडन एवं अरन बडी ल कनि के दवाइक दू करन मीक एकदल मए  
 गेल । मित्ररात्रक पुत्री मुनरी चर अरन लेना के करन लए अरन पदमलीइ  
 जे अपन पिताक मयक उपान्त कोरि मित्ररात्रक अरन के लय छीइ ।

भंडन के हेकिराई मुनरी अरन मे निमिन मय अरन म हुनका लकनि  
 के अरन एव अरनधिन नया मयन दल कोरि मित्ररात्रक लय तथा हुनक  
 दू गनि लय मे हुनक दिन मुने मयन दल दलधिन ।

भंडन अरन के बाइ हुनका कन्या मे दवाइ कइअन तथा अरन नयाक  
 मयन राजा बनि गइअ ।

किन्तु दिनक उपान्त भंडन कवन लिक विचार मे राजा विवाह एवं  
 राजा सुरमनक कोरन दू पदमलीइ । कवन कनक अरनय बाइ हुनका लय  
 लेनाक लय निमिन सयन के लय दल कइअन । अरन हुनका लय लय राजा  
 लकाइ कइअन । लकाइयन अरन कवन दवाइक लेना अपन अपन पिताक  
 दवाइक पदमलीइ राजा विवाहयक सय दल कइअन । अरन कवन पदमली  
 कोरि लय पदमलीइ राजा लय मेद अरन कइअन । एहि तरहँ भंडन मुगलपदीक  
 सय अरनदू दवाइक दल मयन दल अरनदू दल मयन दल ।

## अप्रमादी व्यक्ति

[illegible]

एक दिन प्राणाय कृति-कर्मक दनु अपन पुत्रक गन गेलाह । एक सय बाहर कुमार केँ टमि लेलक छहि सँ छँ ललकनु धरि गेलाह । बाहरनु पुत्र केँ मगल कहि लेहि गेलाह । आ मुनक केँ उठाय एक मृगस सभसँ गान्ध वनक सँ छहि दल लया आनिपलाक विचार केँ बन अछि विचारय लगलाह "छोट बाल, हरेक गन अछि गन भेटैत अछि छ । मरलाक आ-गन भुक्त" । एहि गन केँ सोचि पुन अपन स प से लड़ि अछि गेलाह ।

मन्त्रसमायगे माहृतं एकमाहृतं नैषिद्या त्राकणकदन्धि-  
 'कद' श्रुतमाहृतं। तत्राहृतं त्राकणकदन्धि-  
 मन्त्रसमायगे नैषिद्या त्राकणकदन्धि-

[illegible]



## आशाक फल

एक पुण्यपत्र। पुण्य खींचा येना सन्तान स्वर से चतुन भए पुनो यो त्रि  
संस्कारक कमल मध्य एक कल्पक रूप से उपज येना। आनखान कमल से  
साक्षात्सार गहि गोम मुदा यो कमल जाहि सभ्य स्वर से उतरना यो पुण्यपत्र  
कदाक काल ने लुकाई नरीपर भय कुनाएत रहल

परीन से रनार केनिहार लफात के सगलि एहि अंगन के वैशि अउच  
सुत लुकेक मुदा किधा एहि पितृ अंगन भान नहि बेलक अन्त में एक मुनि  
एक दिन रनन केले एहि फल के रोडवाक हेतु नोम ई। एहि मध्य एक  
सद्वर्त मुदा ए अंग के वैशि संकल्प गुनि बुद्धि अंगन सगमुदी से आनि भांकर  
ललन-पुण्यन करए लगलहु मुनि स हि कनाक गंग अश्विन कुलाहि  
एकविंश

आशुका स्वयं का इ पुन पुनो से परिणत भए गेलाइ जिनक रूप ओ  
गुनक सभ्य र द अरि कहेने गेल। राता चतुनङ्गिनी सेन तथा आयात्यक संग  
गुनिक छ भय अउ मुनि ने कल्पन अंगन से गुनी बसचमक हेतु नगरनर  
हैरय अन्त अंगनक पुनोका वानर भोगन सार बन काए गारै। छ।

मुनि सभ्यक निगपुन काल के गुन स पुनर देन सजनाइ जे से अहो  
एहि सभ्यक नाम। अन्त कहने नहि गको से एहि कना के लए ज। गको छ।  
राता मुनिक वनन के भाकार काल सभ्य सभ्य से विनयि अनेका नाम मुन मे  
काल मुन पुन स ह नाम से सदेन नहि सत।

एहि सभ्य उरक अन्त कैन गय। से एक सभ्य बेल नोन सभ्य  
अनेका नाकने के बाध सित अना उगयो जालपर में सानल गेल राता  
स्वा शीतभर से पोटित भए गेलाइ अन्त स ज। ई अन्त सेल लए मुनि से  
अहि अन्ति सभ्य से अ सभ्यन काल लगलहु एहि सभ्यन अरपुन सभ्यन  
स स विनयि सभ्य सभ्य से अ सभ्यन काल लगलहु एहि सभ्यन अरपुन सभ्यन  
स स विनयि सभ्य सभ्य से अ सभ्यन काल लगलहु एहि सभ्यन अरपुन सभ्यन  
स स विनयि सभ्य सभ्य से अ सभ्यन काल लगलहु एहि सभ्यन अरपुन सभ्यन

इ सभ्य सभ्य पुन अश्विन सभ्य स सभ्यन सभ्यन—  
लतावन से बायायली नलक लल एक हमार सभ्य से एक सभ्य सभ्य अहि  
लताक सभ्य से सभ्य सभ्यन एहि सभ्य से एक सभ्य सभ्य से अहि सभ्य से  
पुन सभ्य सभ्य सभ्य, एहि सभ्य से सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य  
सभ्य सभ्य पुन सभ्य से सभ्य सभ्य से अहि सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

आशिकाक एहि तरहक कथन केँ मुनि राजा पुनः अनेक नामक कहयना करल छल मुनि पूर्णकत यदि से से कनो नाम केँ नहि मानल । अत राजा पर उद्दिग्ध भए कोदितोम से जलवाक उपक्रम करलैनह ।

राजा केँ जाइत देखि आशिका पुन राजा से बजलैनह "एक बगुला एक छी पर क शिकार नकरि एह पक्षत पर नहि बैसल । छी ओहि दिन ओतए रहल तथा हांसन भिन विनारलक से । हम एहि पक्षत शिखर पर आबन्छ मुष से छी । एतए मै नहि जतहि एहिजाग शिखर रहए कए सकी तँ कतक नीक होएत ।" ओहि दिन देवरास हन्त असुर पर विजय प्राप्त कए विजयलैनह से "इतर जनैरम तँ पूरा मेला मुदा किछो एतेन कहि नकर भलाग पुण नहि भेल छी ।" अत लजला पर इह मगवान कहि मुला केँ देखि विवाहलैनह से आशका भनी ध पूरा कनरास चाहै अत बगुलाक सर्पक नरो से बाँधि आनि ओतहि परेन शिखर तक पहुँचा बेल बगुला ओतहि बैलि हन्तावृधक नभ छल । तब राति पीबि मगन भेल । यदि सरहँ लक्ष्मण बगुलाक आशा एह सेलैक तखन कहिक आशका कहिक नहि पुण होएत ।"

राजा आकर बात मानि पुन अनेको नाम केँ मुनि से कहलथिनह तथा ओर एक वर्ष भरि रहलह । मुदा मुनिक आभइकति पर पुन अतए से नन्दक उपक्रम करलैनह । राजा केँ जाइत देखि आशिका पुन शिखरक मगव पैलैनह । राजा आशका देखि बजलह से "अब अहाँ पतित रहू । हम जाए रहल छु ।" आशिका बजलह से "अहाँ किरन जइत छु ।" राजा कहल से "अह नचनपाव से एतए संछु कएत चाहैत छी किछा मै नहि । पलाशक फूल बेलाहा मे तँ सुन्दर मुदा सुगंधित नइत छैक । निष्कल मयूर धात्री कबनिइक छति सगई नहि होइत । अत हम अविश काल भरि नहि रहि सकैत छी । कारन हमरा आन सेवाक आशिका प्रतीत भए अह अछि । आशिका राजाकेँ बतल मुनि अति मगन भए बजलैनह "मदरास आह अहाँ इतर मगव भौत छी । आशिका हम नाम धिक ।"

ई मुनि राजा मुनि से आशिकाक नाम कहि आशिका केँ अपन हृद आनि सुसर्जन रहए लगलह ।

## निष्कृति दान

हमरा कु अंत में हिमचन्द्र नामक एक पत्नी राजा बनारस जन्मिल लक्ष्मी  
नामक महाराज से व्यापारी हुए राम जी

[illegible][illegible][illegible]

राजाके कथन शानि बरत देन नर गजाह । ताँह तरह बसत नारह दन  
 धीन राज्य । बलक मृद धन प्रद मृद म आदर जन ह । दद देव गुन राजाके  
 कानन कोनि राजा से गुणक प रना का नंद

[illegible]

११३ क स्निह भुयकं मः ॥ कहेत मनु लघः कः ॥ ११४ ॥ मरुतदेव के उरि  
मोः ए ॥ ११५ ॥ मरुतदेव के उरि

इति स द्वावर्ष (शौच) गच्छ । शालक्य नामधरायुः कृष्णायुः चतुर्दशमे  
संवत्सरं कृष्णमेव । शालक्य नाम उचितं राखेत्तु गच्छ ।







महि सम्पन्न है । शुभशेष आपन भीषणक कालिभ सम्पन्न जामि तथा सैताएक प्रति  
 निराक आप वदय है एक स्तुति काय भवता । शुभशेषक सम्पन्न के वदय प्रत्य  
 मय गेसाद तथा की कालिभ काल चकट मय दुनक वपन काँरे तथा ह्रींशुभन्त के  
 शेष के कुट कट हैल । मय महि कटय के वपन सम्पन्न क्षमाद तथा रत्ना मय के  
 शान-मान के कल्प कल्प ।

शुभशेष पिनाक कटोर कल्प है दुनो क्षमाद तथा विश्वामिक के कल्प  
 दित्त वदयैत । विश्वामिक शुभशेष के आपन पंथ-पुन बना कल्प तथा विश्वाम  
 मय शानक सम्पन्न कशीए एक मयन तन्त्रशी बनाय हैल ।



विचित्र देश

[illegible]

एक समय देवदेव व्यापारक देव स्वर्गमें जाकर रहे इच्छाएं करते चलते।  
एहि क्षणपर पर कंचिसेना आगने रंग में अनुनाय करते चर्करा—“एनेक दिन बरि  
तैं हम तासुक मारक प्रसंग में विष्णु नहीं कहल गुरा बचन कहिक आयेत हमर एहि  
ताइक गुरुता के हत आयेत नि कहिक पर वृत्त हमर परम दल र प्रल,” कंचिसेनाक  
बचन बहिक देवलन के आयेन मम हत काजलदेव संगी” को तासुभीह कथान्  
आयेत कथा नहि आये मारक प्रसंग मार में कहल गये—“कहौ कंचिसेनाक बरि  
कानो चन्दचह र नहि कहिओइ।”

दशमोक्तक वचन गृहि धुनक ध्वर अत्यन्त मधु में बसलीह— 'हम कीमती  
मना में को कोह बिदिह तो सगहू कह दधम विदम ने कहूँ कि कहैत । हौन भुवि ए'  
माएक उपर भुवि देवकीन गुमस जण वन में। ह तथा फलनो संगीतक वाता  
कहलैह ।

देहगतक शरीरक लक्षणका एक नै वैलक्षण्य स्वातः एतक प्रियांग मे निच भव गोल छन्दक का । एत साधुके देव नष्ट मे अवस्थित का न्यायगत भव रोग-कुर्या कर पदल कदाहए अमलीह । एहि हानन ने एक दिन क. लक्षणक तातु एक दानीक शीत कीलितन। के एक आनहार कंडली मे बहाए बाहर के एक दंड अमला के बन्द कर देन तथा अतिदिन मलका के एक गार्दिक वाक मे बाधा पास मान छाया लोचनक देव देल करिषि । एहि तरहे कीलितन। साधुके ह ११ मनापल बाहल आनए अमलीह के "हमा एत एतक छवि, हम नक कुल मे उ-एष लक्ष तया कापरदो कनिचं रासन लमन एहि तरहक विषयि भागए कहैत अछि । एहि हम कारले लोक कन्याक जन्मक निन्दा करैत अछि किछक नै कन्या-कीन मनु, अनदि तथा विधवावनक दोष मे सुचित भए जाइछ ।" एहि तरहे लोचैत कनिचन।



[illegible]

मधुमति ८६ प्रकाशक वचन सर्वत्र लेना व पुस्तकपत्र पत्रिका "प्रति ४० गण  
मुक्ति लेना से राजा जेवैत मंद सकेत लुपि वा जाई ॥ लेनाक कफरपत्र जिजायदाथ  
राधना अतात मनु अथ से वचन ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥  
१११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥  
१२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥  
१३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥  
१४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥  
१५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥  
१६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥  
१७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥  
१८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥  
१९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥  
२०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥  
२११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥  
२२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥  
२३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥  
२४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥  
२५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥  
२६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥  
२७१ ॥ २७२ ॥ २७३ ॥ २७४ ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥ २७९ ॥ २८० ॥  
२८१ ॥ २८२ ॥ २८३ ॥ २८४ ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ २८७ ॥ २८८ ॥ २८९ ॥ २९० ॥  
२९१ ॥ २९२ ॥ २९३ ॥ २९४ ॥ २९५ ॥ २९६ ॥ २९७ ॥ २९८ ॥ २९९ ॥ ३०० ॥  
३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥  
३११ ॥ ३१२ ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥ ३१८ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥  
३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥  
३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥ ३३६ ॥ ३३७ ॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥  
३४१ ॥ ३४२ ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥ ३४७ ॥ ३४८ ॥ ३४९ ॥ ३५० ॥  
३५१ ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥ ३५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥ ३६० ॥  
३६१ ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥ ३६९ ॥ ३७० ॥  
३७१ ॥ ३७२ ॥ ३७३ ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥ ३७६ ॥ ३७७ ॥ ३७८ ॥ ३७९ ॥ ३८० ॥  
३८१ ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥  
३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ४०० ॥  
४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥  
४११ ॥ ४१२ ॥ ४१३ ॥ ४१४ ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥ ४१७ ॥ ४१८ ॥ ४१९ ॥ ४२० ॥  
४२१ ॥ ४२२ ॥ ४२३ ॥ ४२४ ॥ ४२५ ॥ ४२६ ॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥ ४२९ ॥ ४३० ॥  
४३१ ॥ ४३२ ॥ ४३३ ॥ ४३४ ॥ ४३५ ॥ ४३६ ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥ ४४० ॥  
४४१ ॥ ४४२ ॥ ४४३ ॥ ४४४ ॥ ४४५ ॥ ४४६ ॥ ४४७ ॥ ४४८ ॥ ४४९ ॥ ४५० ॥  
४५१ ॥ ४५२ ॥ ४५३ ॥ ४५४ ॥ ४५५ ॥ ४५६ ॥ ४५७ ॥ ४५८ ॥ ४५९ ॥ ४६० ॥  
४६१ ॥ ४६२ ॥ ४६३ ॥ ४६४ ॥ ४६५ ॥ ४६६ ॥ ४६७ ॥ ४६८ ॥ ४६९ ॥ ४७० ॥  
४७१ ॥ ४७२ ॥ ४७३ ॥ ४७४ ॥ ४७५ ॥ ४७६ ॥ ४७७ ॥ ४७८ ॥ ४७९ ॥ ४८० ॥  
४८१ ॥ ४८२ ॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥ ४८५ ॥ ४८६ ॥ ४८७ ॥ ४८८ ॥ ४८९ ॥ ४९० ॥  
४९१ ॥ ४९२ ॥ ४९३ ॥ ४९४ ॥ ४९

[illegible]

श्रीरि पञ्चनिक संग एकरुप धेयवाग्निर्वा कर्मान्मेना समुत्पन्नः कदाचित् श्रीरि  
धर्मादि नै सप्त कृष्णास्त श्रुत्वा रात्राश्च सैव सप्त सप्त कर्माणि कर्तुं शक्तेत। तै रात्राश्च समीप  
लप्येन्नाह । रात्रा वैश कं देवि प्रसन्न मए नवन्नाह के "कदाह रात्रि ह्यग दत्त स्थपन



# क्याय

एक शस्य पारागणं न एक सैत छत्ताह । आदि गैरक नमन पवित्र नम  
को निष्ठपूवक धर्मक आचरण करैत अपन आन नगरीत फरैत छत्ताह ।

एक दिन सैत निनामक जे भई अरुन्त निमित्त अन्ति दमन एव साधन नै  
उपनयन कएल अगन अ शस्य हुनका दैत अनुचित छत्ताह । अत को अपन  
उपनयनमान्य न एक नन आगन का शस्य सम्य देश ।

किन्तु दिनक उपरीनल रजक राजा निमायक पुनो कालकगुणी हाथ पुनराष्टक  
दुनी मिरी जलक दैत अनु अपन आ शस्य पर अछत्ताह । अनंतस सरोवर सै  
सधक हुन पुनक पुनक पाद छल । लपकक पाद पर लपकक पाद पर  
गुदप, देवपुत्र एवं देवपुत्रक पाद पर देवपुत्र एवं देवपुत्रक पाद लाव करैत  
छत्ताह ।

धात पर पशुच दुह कन्य पशुच गहात करैत पशुच जे अदिने सम सान  
करैत नै हम । कालकगुणक पावन छल जे हम लोकक पानन करैत छी ।  
सिरोक अन्ति अन्ति जे हम लोकक गैरकगुणक गणक कर्म नै करैत छी ।

गहि नदरे न नदरे करैत अपन अपन म म निमेष नदि अथ मफन जे  
क पैष छवि क न नदरे न नदरे निमेष नदरे अथ ल कनि गहात  
धुनक विषयक पैषकगुण न नदरे न नदरे न नदरे । पुनराष्टक अथ निमेष अथ  
निमेष कर्म अन्तिनदरे कएल जग एक अथ नैपाराष्टक एवं विरुद्धक के अन्तिनदरे ।  
नैपाराष्टक एवं विरुद्धक अथ नदरे निमेष अथ नदरे अथ नदरे अथ नदरे  
आग्रह कएल अन्तिनदरे । अनन्त गानकगुणक एन न नदरे अन्तिनदरे ।

एक नून नूनक के नूनक पर अथ नूनक जे अन्तिनदरे नै अथ निमेष  
नैत छवि अथ नूनक अन्तिनदरे न न नूनक अन्तिनदरे अथ नूनक  
अथ नूनक नूनक अन्तिनदरे न न नूनक अथ नूनक नूनक अथ नूनक  
नैत अथ नूनक अथ नूनक अथ नूनक अथ नूनक अथ नूनक अथ नूनक

एकक अपन सुनि दह कन्य पाव शस्य नैतक अ द्वादस नैतक । आक  
कगुण नैतक नैतक नैतक आन अन्तिनदरे, अथ नैतक रंगक आन अन्तिनदरे नैतक  
अथ नैतक नैतक नैतक अथ नैतक नैतक अथ नैतक नैतक । नैतक के नैतक  
अथ नैतक आन अन्तिनदरे नैतक नैतक नैतक । अथ नैतक नैतक नैतक  
नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक  
नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक नैतक

साराचा विषयक प्रणय स्वभाववाली काही बर्बाद पुष्पगदित काजकरणी नाचक गुणी निकट । इस अर्थाक एक पदमाक उद्देश्य से ऐलहु अर्द्ध ।"

कालकवलीक कला गुनि सड अमुकताएक पुष्पगदित से "अर्द्ध केदेन स्वभावक तथा आचारगुण लोकक संग रद्व वसन्त करैत छी ।" कालकवली मरुनी कर रैत बज्जतीह जे "अपुनक हकी ईश्वरानु कन्या एक कपलनी पुष्पगदित प्रियाव होइत सुधि अकरा सम्य मानक काम व, उचिन फलत पर काथ तथा पुनचाह मे आनक्ति रहैत आ; पक्ति वनर अराव्य होइत अर्द्ध ।"

सैठ कालकवलीक वचन गुनि उपवा नरैत समझाह— "हमरा मे एहि तरक गुण नई अर्द्ध अतः अर्द्ध कहु अन्यत्र आन आभव ताकु ।"

कालकवलीक गलीक उवाचा निरः स्वभावगुणक वन एव स्वर्गभूषण पहिरि सैठक उपवासवालाक समक्ष मे पर आमा पतारैत ठाहि भए गेलाह सैठ तिरु क ऐलि वगल भए पुनविह जे "अह के दो तथा कलए ऐलहु अर्द्ध ।"

सैठक प्रश्न गुनि तिरु अर्द्धन पुन एन संवेदगुण चाली मे नजलाह जे "हम पुनगुणक कन्या गिले भिहनु तात हमरा आगला भयली कुओ अर्द्ध तथा लक्ष्मी नाम से संवेदपन करैत अर्द्ध । इस एतर एकवचक उद्देश्य से ऐलहु अर्द्ध ।"

तिरुए कपल गुनि सैठ हुकहु से विज्ञासा पुनक मान्द— "अर्द्ध केदेन स्वभावक तथा आचारगुण लोकक संग रद्व वसन्त करैत छी । तिरु प्रश्नकर रैत कहैत जे "अर्द्ध एक कपलता तथा वन एव प्यास के नोदित जे पुरुष अपन काम के गहि छाडैत भिहनु अकरा मिय होइत अर्द्ध । अकाधी, शालधान, नृधुभाए किहक रत तथा मय अर्द्ध के गांधे इस मनुष्यक लारि मुन इकुलित भए जाइत छी ।"

सैठ तिरुए वचन गुनि सड अणन गेलाह तथा तिरुए आध्यात्म कए कहैत जे "अर्द्ध विनु उपवासक आनन एवं शरण अर्द्ध के ऐलु अर्द्ध अतः तिरुए कोहि आनन पर नैत तथा शरदा पर वृति मातःकाज असातन मनावर पर आन पविनाह स्वान कएजाह ।







## दिशाक ज्ञान

एक मन्त्र नाम यस्मिन् एक वंशित इत्यर्थः । यदि वंशितैर्वा यैः कश्चिदपि कृतं यत्नं करोत इत्यादि । इत्यनेन एवैवम् सगंधकान् इत्यादि । इत्युक्तं ।  
इति वंशितैर्वा यैः कश्चिदपि कृतं यत्नं करोत इत्यादि । इत्युक्तं ।

[illegible]

चायदास गुणस्थान लक्षण के अनुसार बनावट इस प्रकार दिखी करेक लैक ११

इसका अर्थ है कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे कामों को कर चुका है।

साल १९५५ में सा. एड. संस्थान द्वारा पुनः लब्ध रूप संकल्पित किया। मिथुन संस्थान, मोरारजीवाकर संस्थान द्वारा तथा मादर, दुबईक द्वारा दक्षिण अफ्रीका में पाहों के प्रसारण का मा. एडि. सा. द्वारा न. संस्थापक संस्था

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ अथवा धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ अथवा धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

राजा इक्ष्वाकु के यथोचित सम्मान कर इवेतकेतु से कहता है "सम्पाकान् उद्यान ये आये ताम्रय एवं तपस्वीक दर्शन करम् ।" इवेतकेतु उद्यान आया तथा नाक्षत्र एवं तपस्वी के एकान्त में कहल है "राजा आइ उद्यान में आताइ । अतः राजा के प्रसन्न करवाक हेतु किछी कौटुक दाय्या पर सुगंधि किछी शानि पर भक्ष्य तथा मान-मान आदभ्यास्य कार्य करम् । एहि सारहे" राजा के पदमार्ग दूर श्री स्वर्ग पगारुट्टीक दर्शना पर एक आगन पर, धन्य रंगक चमकैत चक्षु से नयनमान पोनी के एक निचिम रंगक पांदरी पर शानि नारि पीत छात्रक धनक उत्तर देत बैसताइ ।

राजा सम्पाकान् उद्यान में आये इवेतकेतु के प्रदाम कर बैसताइ तथा अपने मुनेबिल से एहि संगे बसलइ जे संकल्प लप कहला ते की लोक आनुपिक कृत्यक मानकार गए, तथा से मुक्त भाइ जाइतु ।"

अनुचर देत पुगदित कहलधिनः "बहुभुत बेलहु से पाप कहला से तथा चमक आचरण नहि कहला से इउर वेद पननिदारी चितु आचरण से ते दुख से मुक्त नहि मष्ट सकैत बाधि ।" पुगदित एहि शब्दक कथन के गति इवेतकेतु कहलधिनः "जे इउर वेद पदम बिनु आचरण केने दुख से मुक्त नहि होइतु ते की वेद निष्कल एवं संभवहित आचरण शब्द धिक ।"

एहि पन्नक उक्त देत पुगदित बसलइ जे "वेद निष्कल नहि धिक । वेद पढ़ला से कालिक शानि हाइत तथा आचरण से शान्तिक ध्यान प्राप्त कहल जाइत ।"



## विश्वासघात

वासनं वातं च चारुभाभी च एक प्रसिद्ध द्रव्यं जल । धृतिं वायुस्य उपायः  
 है कश्च वातस्य भयं राजा च निवेदनं कष्टं च धृतिं ते लोकक रक्षकं करणं  
 साध । राजा नगर-सैन्यराज्यं च धृतिं वायुं चैव पश्यन्त्येकं कदाचित् देवः

[illegible][illegible]

कृष्णमाला सेठ दुष के गुण लगीन में शक्ति हाकु के भाके में बैगाध गुप्त रूप में साधनाक एक पंतीछान्द तथा सेठ दुष के बच-स्थायि पर लख जायद तमझादि से बन रहल ।



## सद-भाग

मानव-सृष्टि का अधिकांश अंश ही से प्रतिपन्न हुए हैं गुणग्राहक न वह एक  
काल तक पराक्रमी राजा भव्य है। यदि राजा का शक्ति का है तो वह गुणग्राहक का  
सुख तथा दुःख महामहान् कर्त्ता सुश्रुति से देवराज गुणग्राहक के शक्ति का है नही  
का है वह एक अत्यन्त ही शक्तिमान् है नही।

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

कोहि तीर्थ सत के स्वीकार कइला पर उतरी मठा-धन पुनः भाग संग मृतक पर काएलीह । कभी एवं किन्तु उन देव-गुरुपथक स्वागम के देखि लोक इरी-पुख मए गेल ।

राजमन्त्र में उचर्योक्त मान कपांग बहुत लागल । सोइदक र शि एव कलाक आंग के प्राप्त कर भूतक त्वर्ग कनि रल तथा रुका बैसनदीन मए उखल कानन घन मरीछ होमए लागल । सो कपोप कथ्य जे पति मुनिक प्रसमन करैर इधर के लेह में दयित काग देत सुक्रीह; जे आंगन उन्मुख कला उन ल-वेष कानित स धातु तथा को उटील करैत छलीह । सोहि राज से हीन मए वैथत । सोकरा गुनि माग कलाक अंगान में जीन पए गेल ह । मठा पुनः भाग तथा स्वर्णक अंगाम तेसक स्मरणमाताह । सैं सो लोकनि विचरित्त मए प्रसन्नक मइया लेलैत तथा । धर्मिक सत के लेकनाक उपभोग करए लगलाह ।

एक समय मइराज पुनः कला कानन प्रियतमा उचर्योक्त संग लउली छीह । शरीर में उचर्योक्त मुह मेकी मानल छल । एहे ध-चनार बन्धव एक पेड़ी के तुराए पए गेल तथा पुनः भाग देवदूतक कला पर बल्ल रहलाह । लक्ष्मनान सो गुनि होकर पेड़ी के सुगंध लाग गेल । पेड़ी जाइ में सीमया लागल । उचरी अपन प्रिय बान्धुक अभिरुच्य नगनि कन्दन करए लगलैत । उचरीक कानन गुनि दुःखक पैचक शब्द दृष्ट । एवम समयक पान नति रज तथा सो दिनु नगनि गन्ध के में कल्पक पेड़ी के लगत छनलैत छल । सोकरा लोकनि बितुली चमकाए हुनक बघहीन शरीर उचरी के देखाए रल । उचरीक सत मग मए गेल । सो तगछारे साकाश न उकि मनछिया माः गलैत ।

उचरीक विरह में पुन चा टन्मच मए दिनु गाले पूगाए लागलाह तथा खन्त में मानसरोवरक मधोप पहुँचलाह । सोकरा सो अपन बिकतमा के इंसिनीक रूप धारण करै कानि अर्थात् नग नल बिहार करैत देवकाधिन । सो उचरी के चीह्नि स्निह-पुर मए निवदन कारण ते "हे उचरी । सदा रहैर मए दगरा छीकि मल सेनाहु कनेछ गवा ते करै निज ।"

उचरी पुनः भाग लोचपुर्ष बघन पुन निःशुह मए उतर देत बजलैत । "हे मइराज । आब हमर-साइ"क मिलन में की पए ललैछ । हम ते आब सदा ही एहि तगछीपथक मए गेल छी जेना दूचक तथा के नप उपाक संग पुनमिलन नहि मए करैछ ।"

उचरीक निःशुह बाणी के गुनि पुनः भाग अपन बीजता के प्रकट करैत मानिनी कानि बजलैत — "हे विरे । उचरीक विरह मे हमर विविध स्थिति मए गेल छी । आब हम सेदेन में आराध मए रोज छी जे तरकज में दगरा में बाखी करि



नहि निधानल इंद्री अहि तथा रास्य-कार्येभ्यो ये हस्य मोन नहि लगीछ । पुनरस्य  
 ज्ञाता वनन के मृनि उदगो अपन असमयता असाह करैत बजभादि—“हे ताव ।  
 अहं ते लभ गरह दानर गोकर्ष करैत छनहु । तथा दानर पुष्टिह हेतु मन्त्र प्रयान करैत  
 छनहु कुनो ज्ञाव नहि ते को मर सचैत । अन्ध अहं हंसर मिलनक उक्तता के  
 छोड़ि अवन पव अल भल”

[illegible][illegible][illegible][illegible]

उपशोषक क्षयानिबन्धन ९. सूत्रि पुस्तक १०४५ हनु एनडय के मुनके







[illegible][illegible]

एकमे समक कथा सुनि माक्षण लोकनि कर्मदा हुनका लोकनिक मोतए जाए अनुनय करैठ सकलाह के "अहाँ लोकनि मे सँ किनकु शील मंग नहि मेला अस्कि । अतः हमरा लोकनि केँ कुरुधर्मक उपवेदा एहि सोनाक तस्ती पर लिखबाक कह करी ।" माक्षणक आज्ञा कएला पर श्री लोकनि कुरुधर्म केँ सोनाक तस्ती पर लिखि हुनका लोकनि केँ कृपार्थ कएला जकरा दण्डपुर आनि राजा केँ समर्पण भँ कएला बर्धा मेला ।



## लौकिक अन्य कृत अन्य

१. बदायुनि विजयति नाटक—विद्यार्थिक जीवन पर आधारित सरल भाषा, सुललित भाषा एवं उत्पुष्प कवनीयकभक्त कपूर्व वैभक्तिक नाटक । मुख्य २) टाका भाष ।
२. कल्पवृक्ष नाटक—कल्पवृक्षकुलीकृत भाषा जीवन मिद को बदायुक नाटक रामनाथनाथ गुनाक अन्य भेल कुद पर आधारित शहीद भावना, जोजसी भाषा एवं सरल कालिख के वैभक्तिक नाटक । मुख्य १) टाका भाष ।
३. काकाई नाटक—होकराना, भगवन्कि एवं भावलीक अन्य भेल कालिख पर आधारित भावलीक नाटक के सरल को मनोरञ्जक रूप से प्रतिपादित वैभक्तिक नाटक । मुख्य १) टाका २. पैना भाष ।
४. विद्यालय-कथा—कथागणिताना सरल कालिख कृत कथा के रूप, सुललित, मनोरञ्जक एवं समानोत्पादक रूप से परिचित को परिचित वैभक्तिक के कल्पित रोचक कथा । मुख्य २) टाका भाष ।

मुद्रक मालि स्थान

ग्रन्थालय,

टानर चौक, दरभंगा

२२

श्री समरनाथ झा

द्वारा—विहार रिजर्व सीनारटो, पटना-२